राज
कॉमिक्स
मूल्य 8.00 संख्या 618
अश्वराज
और
श्रव्यशक्ति

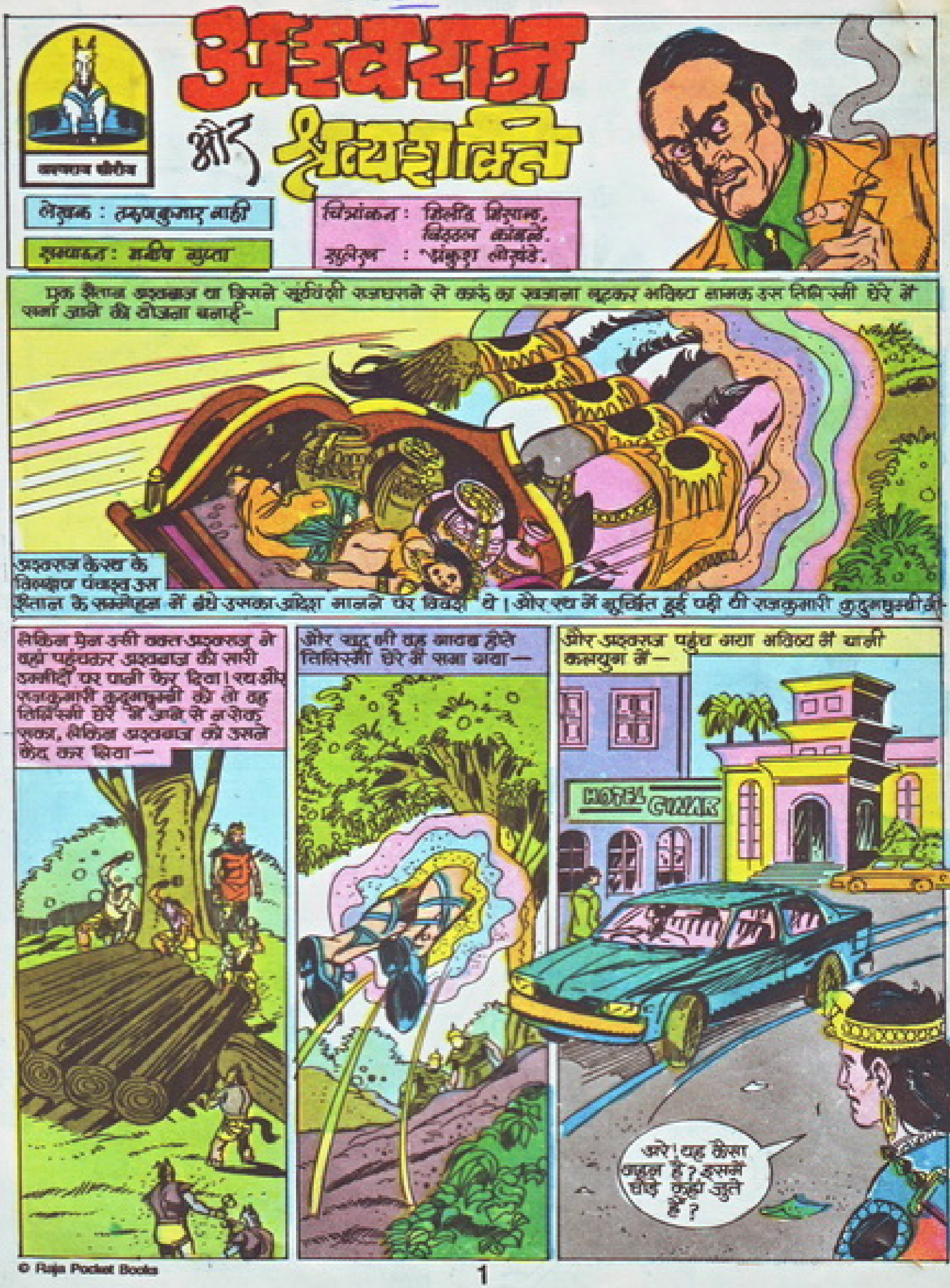

© Raja Pocket Books

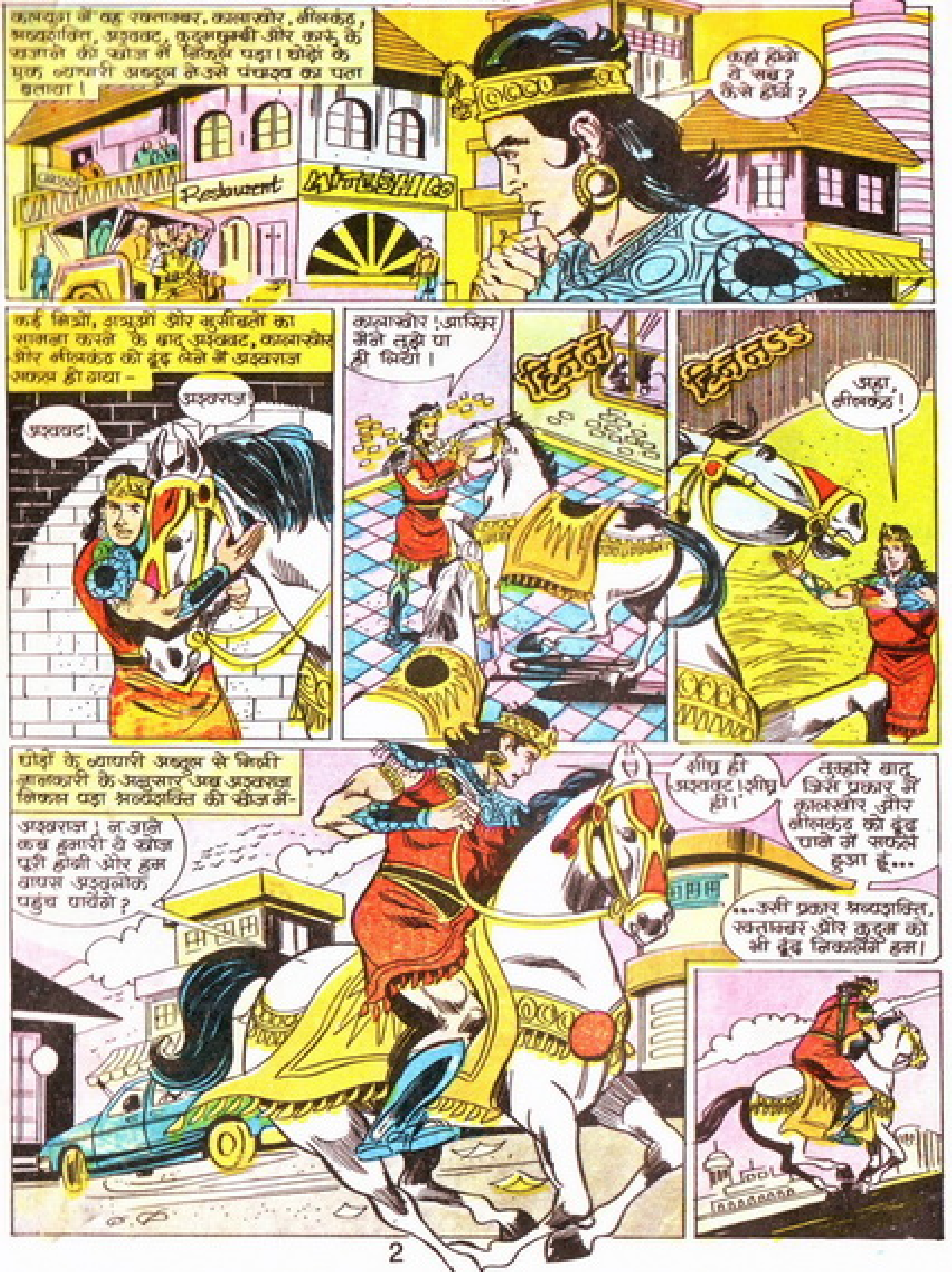
कलयुग में वह रक्तखार, कालखोर, नीलकंठ, शब्दशक्ति, अश्ववट, कुदमकुमी और कारू के खजाने की खोज में निकल पड़ा। घोड़ों के एक व्यापारी अब्दुल ने उसे पंचरत्न का पता बताया।
कहाँ होंगे वे सब? कैसे होंगे?
Restaurant
कई मित्रों, शत्रुओं और मुसीबतों का सामना करने के बाद अश्ववट, कालखोर और नीलकंठ को ढूंढ लेने में अश्वराज सफल हो गया –
अश्वराज!
अश्ववट!
कालखोर! आखिर मैंने तुझे पा ही लिया।
हिन्न
हिन्नऽऽ
अहा, नीलकंठ!
घोड़ों के व्यापारी अब्दुल से मिली जानकारी के अनुसार अब अश्वराज निकल पड़ा शब्दशक्ति की खोज में-
अश्वराज! न जाने कब हमारी ये खोज पूरी होगी और हम वापस अश्वलोक पहुंच पायेंगे?
शीघ्र ही अश्ववट! शीघ्र ही।
तुम्हारे बाद जिस प्रकार मैं कालखोर और नीलकंठ को ढूंढ पाने में सफल हुआ हूं...
...उसी प्रकार शब्दशक्ति, रक्तखार और कुदुम को भी ढूंढ निकालेंगे हम।

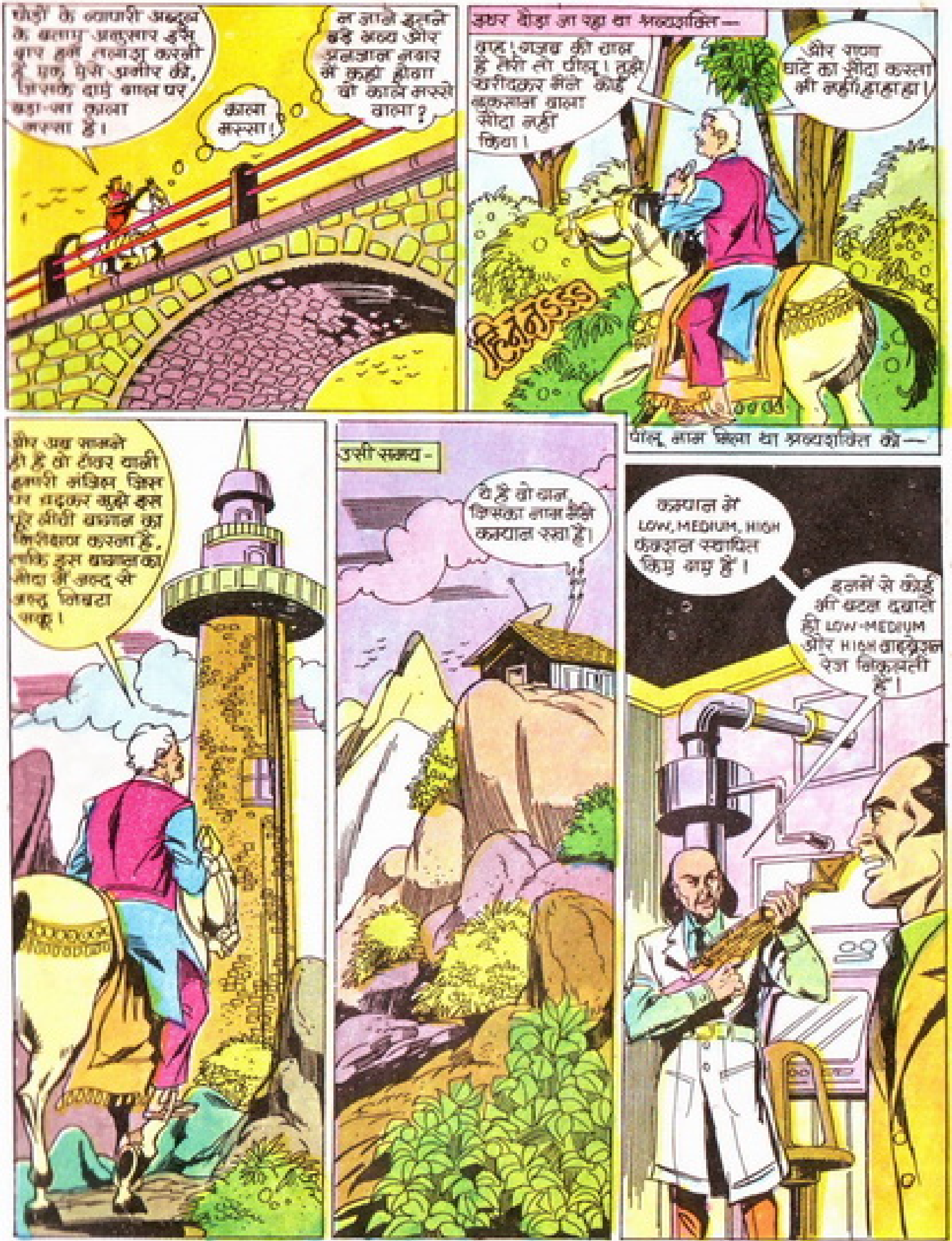
घोड़ों के व्यापारी अब्दुल के बताए अनुसार इसी पुल पर मुझे तलाश करनी है एक ऐसे अमीर की, जिसके दाएं गाल पर बड़ा-सा काला मस्सा है।
काला मस्सा!
न जाने इतने बड़े अरब और इतने बड़े नगर में कहां होगा वो काले मस्से वाला?
उधर दौड़ा आ रहा था श्रव्यशक्ति —
वाह! गजब की चाल है तेरी तो पोलू! तुझे खरीदकर मैंने कोई नुकसान वाला सौदा नहीं किया।
और शब्बा घाटे का सौदा करता भी नहीं! हा हा हा!
हिनस्स्स
पोलू, नाम दिया था श्रव्यशक्ति ने —
और अब सामने ही है वो टॉवर वाली हमारी मंजिल जिस पर चढ़कर मुझे उस पूरी बस्ती का निरीक्षण करना है, ताकि इस बच्चे का सौदा मैं जल्द से जल्द निपटा सकूं।
उसी समय —
ये है वो यान, जिसका नाम मैंने कल्याण रखा है।
कल्याण में LOW, MEDIUM, HIGH फंक्शन स्थापित किए गए हैं।
इनमें से कोई भी बटन दबाओ तो LOW-MEDIUM और HIGH वाइब्रेशन रेज निकलती हैं।

ऐसे अब मैं इसका MEDIUM वाला बटन दबा रहा हूं... अब तुम देखना कि सामने दिखाई पड़ती उस टॉवर का क्या हाल होता है।
??
इधर अचानक! बहुत अचानक ही अश्वशक्ति ने अपनी दिशा पलट दी –
हूंऽऽऽ
अरेरे! यह क्या कर रहे हो पोलू? उफ! क्या हुआ तुम्हें अचानक?
हिनन
टॉवर से आकर टकराई वे शक्तिशाली वाइब्रेशन रेज़ –
सूंऽऽऽऽ
इधर राजा के हाथ में थमा चाबुक बरस पड़ा अश्वशक्ति पर –
इसकी बदतमीज़ी तो मैं अभी ठीक किए देता हूं। उफऽऽ
सटाक

अश्वशक्ति की इस हरकत पर उछलकर गिरा राणा—
आऽऽऽह
इधर उसी पल भर भराकर नीचे आ पड़ी टॉवर—
भरड़ धड़ाम
और इधर चाबुक अश्वशक्ति पर बरसाने के लिए उठा का उठा ही रह गया राणा का हाथ—
हिनहनऽऽ
ओह, ओह! ये टॉवर तो गिर पड़ी।
पसीने से नहाता चला गया राणा का जिस्म—
उफ! अगर पीलू अपनी राह न बदलता तो ये टॉवर ठीक हमारे ऊपर आकर गिरती।
??
भावविभोर होकर अश्वशक्ति से लिपट गया राणा—
उफ! पीलू! तू मेरी जान बचाना चाहता था और मैं इसे तेरी बदतमीजी समझकर तुझ पर चाबुक बरसाता चला गया। मुझे माफ कर दे पीलू!
मैंने एक ऐसी तीव्र आहट सुन ली थी जो इस इमारत की ओर बढ़ रही थी।
??

इधर अट्टहास गूंज उठा उस हट में—
हा-हा-हा! देखा तुमने डाक्टर साहब! ठीक
सकता हूं!
जबकि उसी समय अश्वशक्ति ने राजा के कोट को मुंह में दबा लिया और—
हिनननन
अरे! अब क्या हुआ?
शायद ये मुझे कहीं ले जाना चाहता है!
उफ, पीलू! कहां ले जा रहा है तू मुझे?
कहां ले जा रहा है ये मुझे?
अश्वशक्ति ने अपने खुर की चोट से हट के दरवाजे को खोला—
तू मुझे यहां क्यों लाया है पीलू? क्या है यहां?

अपना ध्यान केन्द्रित करते ही चौंक पड़ा राणा—
कुछ आवाजें आ रही हैं! मगर कहाँ से? शायद फर्श में से!
आश्चर्य व उत्तेजना के मारे राणा की आंखें फैलती चली गईं—
चिरापोंगा! उस टीकर की हालत देखने के बाद अब मुझे यकीन हो गया कि तुम वह काम जरूर पूरा कर लोगे, जिसके लिए मैंने तुम्हें चर्ड़ना टाकन से यहां बुलाया है।
अब तुम मुझे वह काम भी बता ही दो बाबा साहब!
??
अभी उसका वक्त नहीं आया! मगर जल्दी ही बता दूंगा चिरापोंगा!
ओह!
अश्वशक्ति की योग्यता पर राणा को कोई शक शेष न रह गया था—
अश्वशक्ति! अब मुझे यकीन हो गया कि तुममें मनके की जबरदस्त शक्ति है जिसके बल पर पहले तूने मेरी जान बचाई और अब तू मुझे उन्हीं दुश्मनों के पास ले आया जो न जाने अपना कौन-सा उद्देश्य पूरा करने के लिए यहां छिपे बैठे हैं।
और तभी फर्श दोनों के पांवों तले से सरकता चला गया—
हिनन न
ओह, यह क्या?
नीचे फैली एक तीव्र गंध से न सिर्फ राणा ही बल्कि अश्वशक्ति भी मूर्छित होता चला गया—

शीघ्र ही–
क...कौन हो तुम लोग?
और तुम्हारे राज्य की सिर्फ आँखें...
ताकि, तुममें से कोई भी फिर दोबारा यहाँ न पहुँच पाए। न अकेला न किसी और के साथ! हा हा हा।
घबराओ नहीं। हम तुम्हें मारेंगे नहीं. सिर्फ तुम्हें अंधा, बहरा और गूंगा बनाएंगे।
बुरी तरह से तड़प उठा अश्वशक्ति–
हा हा हा
दिन
गर्म सलाखें पिघले सीसे की तरह उसकी आँखों को भेदती हुई निकल गई थीं–
दरिन्दे! शैतान! एक बेजुबान पर जुल्म मत कर!
ओके! मैं अब तुम्हारी तरफ लौटता हूँ! हा हा हा।
गूंज उठी राजा की मर्म-स्पर्शी चीखें–
साथ ही गूंजते रहे शैतानों के अट्टहास–

इधर जैसे पागल-सा हो उठा श्रव्यशक्ति जैसे अचानक आ गया था उसका दिमाग—
आह! उफ! मुझे कुछ दिखाई नहीं पड़ रहा! और मुझे सिर्फ इतना याद है कि मैं इन्हीं शैतानों की बातें सुनकर यहां पहुंचा था! आह! मेरी आंखों में अचानक पीड़ा हो रही है!
हिनन
श्रव्यशक्ति की आंखों पर हुई चोट के कारण अश्वराज के सम्मोहन का असर जाता रहा था—
चलते-चलते एकाएक ही रुक गया अश्वराज—
ठहरो! ठहरो अश्वकेट! उफ! मुझे पता नहीं अचानक क्यों ऐसा लगा कि श्रव्यशक्ति किसी संकट में है!
ऐसा न कहो अश्वराज! प्रार्थना करो कि वह जहां भी हो, ठीक-ठाक हो!
इधर श्रव्यशक्ति ने तोड़ डाले बंधन, और—
धड़ाक
ओफ!
आ

राणा को दबोचे खड़े बदमाशों पर कहर बनकर टूट पड़ा अश्वशक्ति—
धड़ाक
आह...
उफ!
दर्द की अधिकता से बेहोश हो चुके राणा को मुंह में दबोचे भागा पड़ा अश्वशक्ति—
तुम्हारी प्राणरक्षा मेरा धर्म है। क्योंकि जब तक अश्ववट मुझे नहीं मिल जाता मेरे स्वामी तुम ही हो।
चीख पड़ा डाका—
पिंगपांग! उसे कम्पान से रोकने की कोशिश करो। कम्पान से चिथड़े उड़ा दो उसके।
उफ! शायद नीचे गिरने के कारण कम्पान ने अचानक काम करना बन्द कर दिया है।
ओफ्फ! उसे जल्दी से जल्द खत्म करना होगा हमें।
कम्पान में मामूली गड़बड़ है डाका साहब! मैं इसे अभी ठीक कर दूंगा।
जल्लाद! अपनी जीप में उसका पीछा करो।

सबको हक्काबक्का कर देने वाला दृश्य था वह–
ओह! यह क्या? घोड़े ने किसी को मुँह में दबोच कर उठा रखा है।
वह व्यक्ति घायल है। उसकी आँखों से खून बह रहा है।
खुद घोड़े की आँखें भी फूटी हुई हैं। वह बेहोश हो रहा है। क्या चक्कर है?
पुलिस को बुलाओ जल्दी।
ये ठाकुर इस घोड़े का मालिक है।
अद्भुत घोड़ा है तब तो यह।
राणा के हॉस्पीटल...
...और अश्वशक्ति को वेटरीनरी हॉस्पीटल पहुंचा दिया गया–
MARY HOSPITAL
अश्वराज! इतने बड़े शहर में उस वाले को ढूंढना बड़ा मुश्किल लग रहा है।
हाँ, मुश्किल! मगर असम्भव नहीं!

उसी समय वैन की उस खिड़की से झांकने लगी वह प्रलयंकारी गन, जिसका नाम था कल्यान—
...और जिसका निशाना थी अस्पताल की वह इमारत—
वह अंधा इलाज के लिए इसी अस्पताल में लाया गया है विकपांता जो कभी भी हमारे काम में रुकावट खड़ी कर सकता है।
मगर विकपांता के रहते ऐसा नहीं होगा जल्लाद! मैं अभी इस सम्पूर्ण इमारत को ही मलबे का ढेर बना देता हूं!
अस्पताल की इमारत को मलबे का ढेर बना देने के लिए कल्यान से निकल पड़ी थी कल्यान रेज—
सुबह से शाम होने आ रही है मगर अभी तक, भी न तो का ही कुछ पता चला और न ही उस मस्से वाले अमीर का।
और इसी पल बुरी तरह से उछल पड़ा अश्वराज—
हिननननऽऽ आह, अश्वराज!
उफ! तुझे क्या हुआ अश्वराज! ओफ्फ!

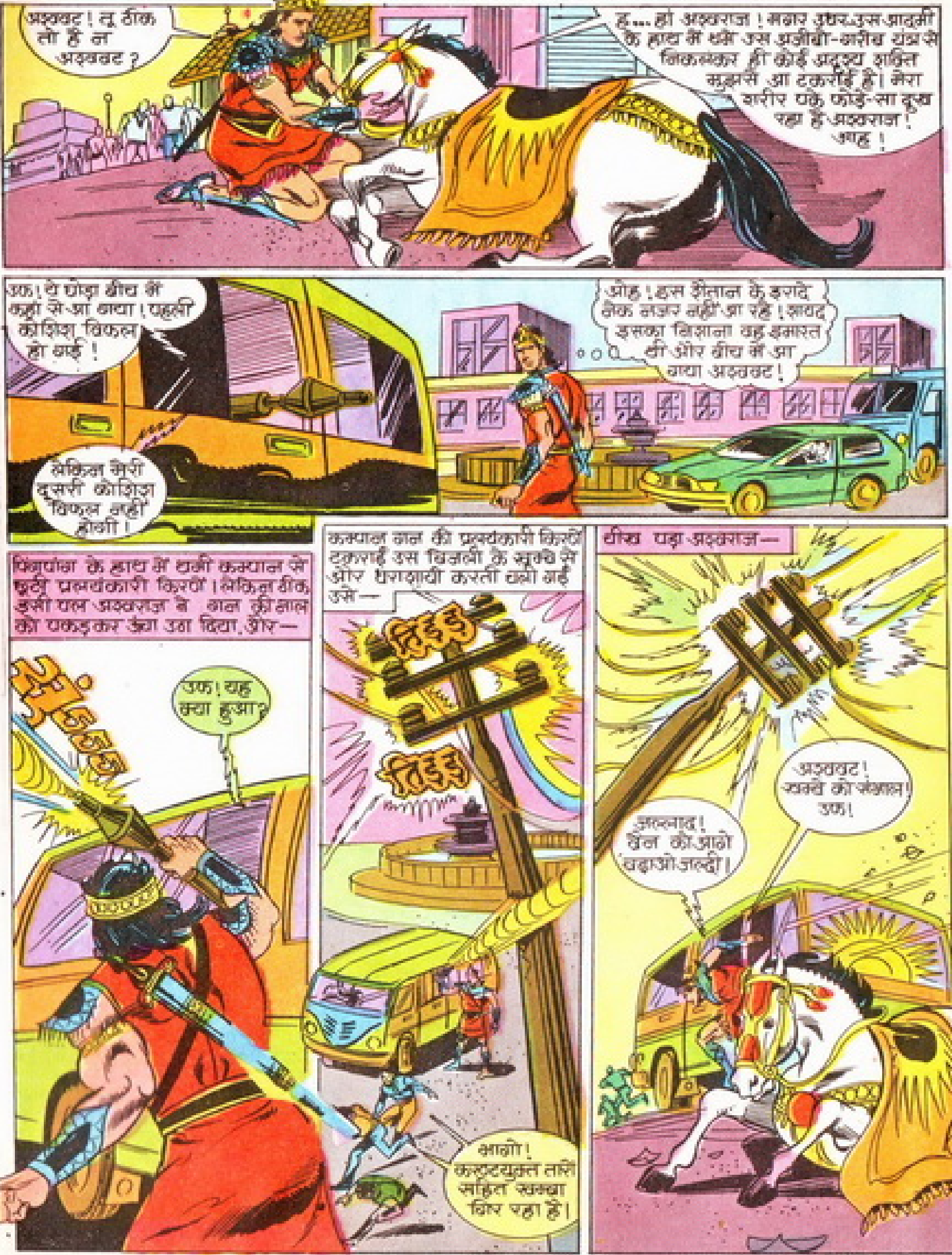
अश्वबट ! तू ठीक तो है न अश्वबट ?
ह... हाँ अश्वराज ! मगर उधर उस आदमी के हाथ में थमे उस अजीबो-गरीब यंत्र से निकलकर ही कोई अदृश्य शक्ति मुझसे आ टकराई है। मेरा शरीर पके फोड़े-सा दुख रहा है अश्वराज ! आह !
उफ ! ये घोड़ा बीच में कहाँ से आ गया ! पहली कोशिश विफल हो गई !
लेकिन मेरी दूसरी कोशिश विफल नहीं होगी !
ओह ! इस शैतान के इरादे ठीक नजर नहीं आ रहे ! शायद इसका निशाना वह इमारत थी और बीच में आ गया अश्वबट !
पिंगपांग के हाथ में थमी कम्पान से छूटीं प्रलयंकारी किरणें। लेकिन ठीक इसी पल अश्वराज ने गन की नाल को पकड़कर ऊंचा उठा दिया, और—
उफ ! यह क्या हुआ ?
कम्पान गन की प्रलयंकारी किरणें टकराईं उस बिजली के खम्भे से और धराशायी करती चली गईं उसे—
तिड़ड़
तिड़ड़
आओ ! करंटयुक्त तारों सहित खम्बा गिर रहा है।
चीख पड़ा अश्वराज—
अश्वबट ! खम्बे को संभाल ! उफ !
ड्राइवर ! वैन को आगे बढ़ाओ जल्दी !

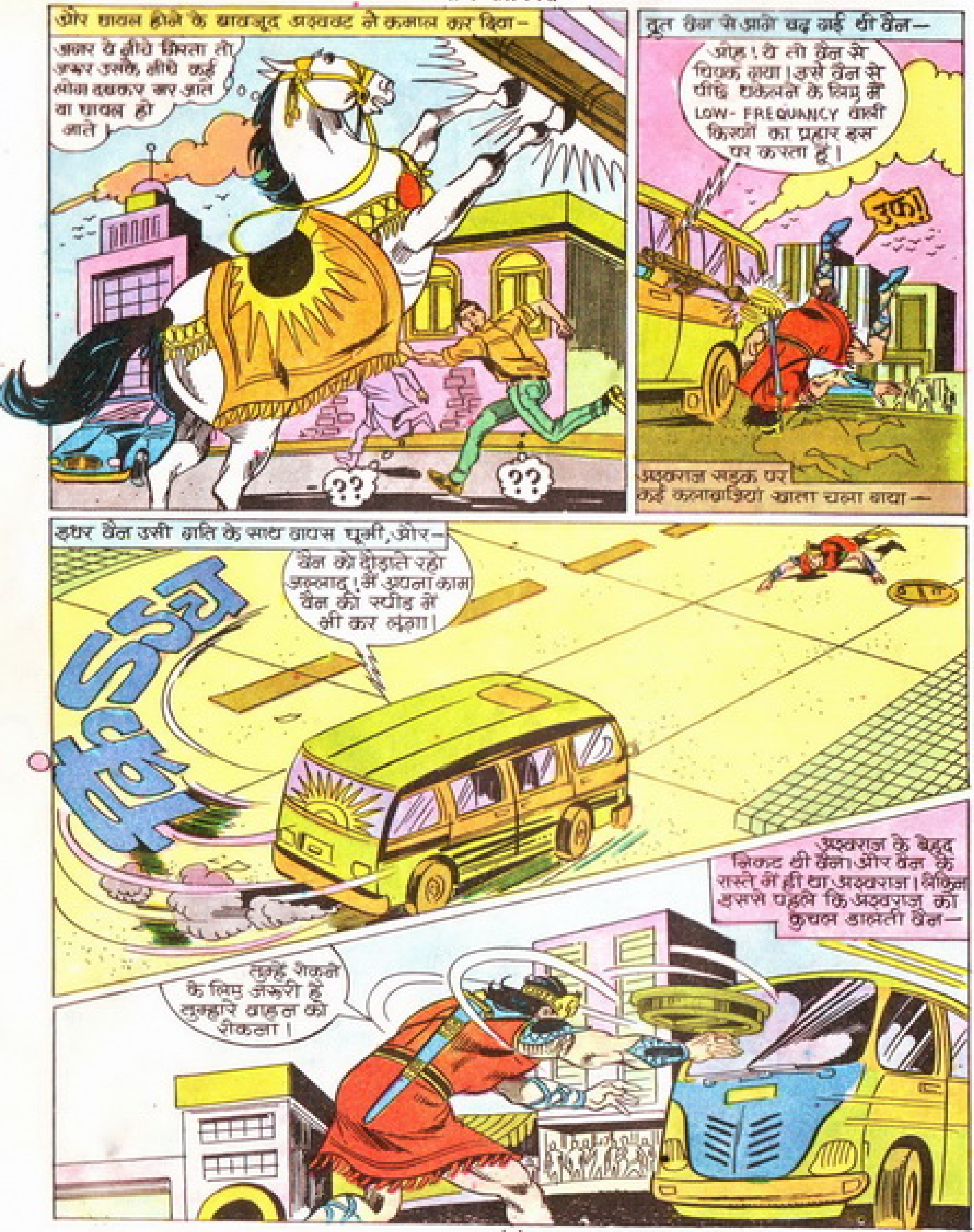
और घायल होने के बावजूद अश्वराज ने कमाल कर दिया—
अगर ये नीचे गिरता तो ज़रूर उसके नीचे कई लोग दबकर मर जाते या घायल हो जाते।
??
??
तूफ़ान वैन से आगे बढ़ गई थी वैन—
ओह! ये तो वैन से चिपक गया। उसे वैन से पीछे धकेलने के लिए मैं LOW-FREQUANCY वाली किरणों का प्रहार इस पर करता हूँ।
उफ़!
अश्वराज सड़क पर कई कलाबाज़ियाँ खाता चला गया—
इधर वैन उसी गति के साथ वापस घूमी, और—
वैन को दौड़ाते रहो अश्वराज! मैं अपना काम वैन की स्पीड में भी कर लूंगा।
अश्वराज के बेहद निकट थी वैन। और वैन के रास्ते में ही था अश्वराज। लेकिन इससे पहले कि अश्वराज को कुचल डालती वैन—
तुम्हें रोकने के लिए ज़रूरी है तुम्हारे वाहन को रोकना।

खटाक
आह
तीव्र गति से आती क्रेन को देखकर अपने स्थान से उछल गया अश्वराट और खम्बा आ पड़ा क्रेन पर—
धड़ाक
आऽऽऽऽ
चीखें गूंज उठी अस्पताल की–
इधर अस्पताल की इमारत का एक हिस्सा कम्पन रेंज के प्रभाव से थड़थड़ाकर नीचे गिरता चला गया–
धड़ड़
चीखों-पुकार से गूंज उठा वातावरण–
चेहरे पर आतंक के भाव लिए उठ खड़ा हुआ पिशाचेश भी, और—
अब यहां रुकना खतरे से खाली नहीं।
झिंचऽऽ
बाहर निकलो!
अश्वराज ने उसे उस वाहन में सवार होते देखा—
उसे रोकने के लिए लोहे की इस रस्सी का फन्दा बनाकर उस पर फेंकना होगा।

लेकिन इससे पहले कि अश्वराज उस मौत को दबोच पाता —
ठहरो! ऐसा मत करो!
ये तारें जिन्दा हैं! इनमें बिजली है! इनको छूने का अर्थ है मौत!
?
अश्वराज ने निगाहें उठाईं —
वह दूर जा चुकी है!
तुम्हारा बहुत-बहुत शुक्रिया! तुमने समय रहते मुझे सतर्क कर दिया जिससे मेरे प्राण बच गए।
मैंने तुम पर कोई एहसान नहीं किया, बल्कि तुमने मेरे पापा की जान बचाई है।
पापा?
सुबक उठी युवती—
मेरा नाम दिव्या है। मैं एक रिपोर्टर हूं। मेरे पिताजी इसी अस्पताल में दाखिल हैं। किसी दरिन्दे ने उनकी आंखें छीन ली हैं। आह!

उस शैतान का उद्देश्य अस्पताल की सम्पूर्ण इमारत को ढहाना लग रहा था। लेकिन तुम्हारे हस्तक्षेप के बाद वह इमारत को आंशिक रूप से ही नुकसान पहुंचा पाया है। अगर वह अपने प्रयास में पूर्ण रूप से सफल हो जाता तो न जाने कितने निर्दोष लोग मारे जाते। और मेरे पिताजी भी।
??
लेकिन तुम कौन हो? और अद्भुत है तुम्हारा घोड़ा भी।
मेरा नाम अश्वराज है और ये मेरा घोड़ा अश्ववद है।
हमें देखना चाहिए। शायद अस्पताल की ध्वस्त इमारत में हमारी मदद की किसी को जरूरत हो।
अस्पताल का ध्वस्त हिस्सा केजुअल्टी का था। भीतर मौजूद कई मरीज मलबे में दब गए थे—
अश्वराज नाम के इस विचित्र इंसान ने मुझे अपना पूर्ण परिचय नहीं दिया।
घबराओ नहीं तुम ठीक हो जाओगे।
आह
अचानक चीखकर अश्वराज के मुंह से निकला—
अरे!
क्या हुआ अश्वराज?
और तब विद्या उस हॉस्पिटल में ही अश्वराज को लेकर अपने पापा वाले वार्ड में पहुंची—
अश्वराज! मेरे पापा को अभी तक भी होश नहीं आ पाया।
घबराओ नहीं! ये जल्दी ही होश में आ जायेंगे...
और तब मैं स्वयं उन अपराधियों का पता लगाकर उन्हें धरा पर किए जुल्म का दण्ड दूंगा।

ये... ये तो...! इसके गाल पर ये मस्सा... ओह! कहीं यही तो वो खरीदार नहीं, जिसकी मुझे तलाश थी।
क्या हुआ अश्वराज? तुम मेरे पापा को देखकर चौंके क्यों?
मुझे एक ऐसे ही मस्से वाले व्यक्ति की तलाश है जिसके पास मेरा एक घोड़ा अश्वशक्ति है।
हाँ! पापा ने अभी एक पीले रंग का घोड़ा खरीदा था। जिसका नाम पापा ने पीलू रखा है।
क्या?
ओह! वह ज़रूर अश्वशक्ति होगा।
पीलू तो इस समय वेटरीनरी में है।
कहाँ है वो घोड़ा? कहाँ है मेरा अश्वशक्ति?
कृपया मुझे उसके पास पहुँचा दो।
मुझे वहाँ ले चलो। मुझे वहाँ तुरन्त ले चलो।
ठीक है। आओ मेरे साथ।
KEEP SILENCE
वेटरीनरी हॉस्पीटल! यानी जानवरों का अस्पताल-
ओह! इसे तो अचानक दौरा आ गया।

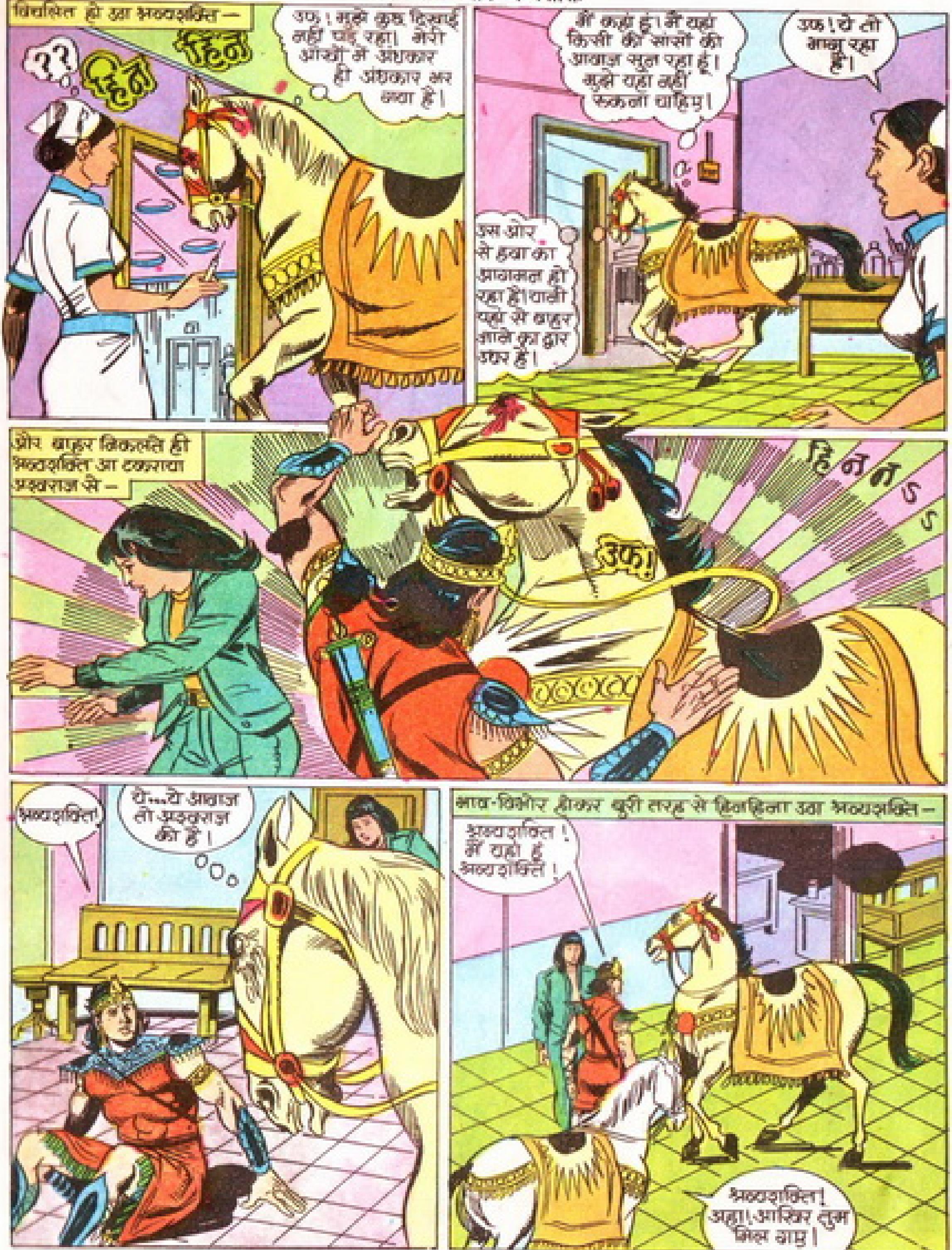
विचलित हो उठा अश्वशक्ति —
??
हिन
हिन
उफ़! मुझे कुछ दिखाई नहीं पड़ रहा! मेरी आँखों में अंधकार ही अंधकार भर गया है।
मैं कहाँ हूं! मैं यहां किसी की सांसों की आवाज़ सुन रहा हूं! मुझे यहां नहीं रुकना चाहिए!
उफ़! ये तो भाग रहा है।
इस ओर से हवा का आवागमन हो रहा है! यानी यहां से बाहर जाने का द्वार उधर है।
और बाहर निकलते ही अश्वशक्ति आ टकराया अश्वराज से —
हिनेss
उफ़!
अश्वशक्ति!
ये...ये आवाज़ तो अश्वराज की है!
भाव-विभोर होकर बुरी तरह से हिनहिना उठा अश्वशक्ति —
अश्वशक्ति! मैं यहां हूं अश्वशक्ति!
अश्वशक्ति! अहा! आखिर तुम मिल गए।

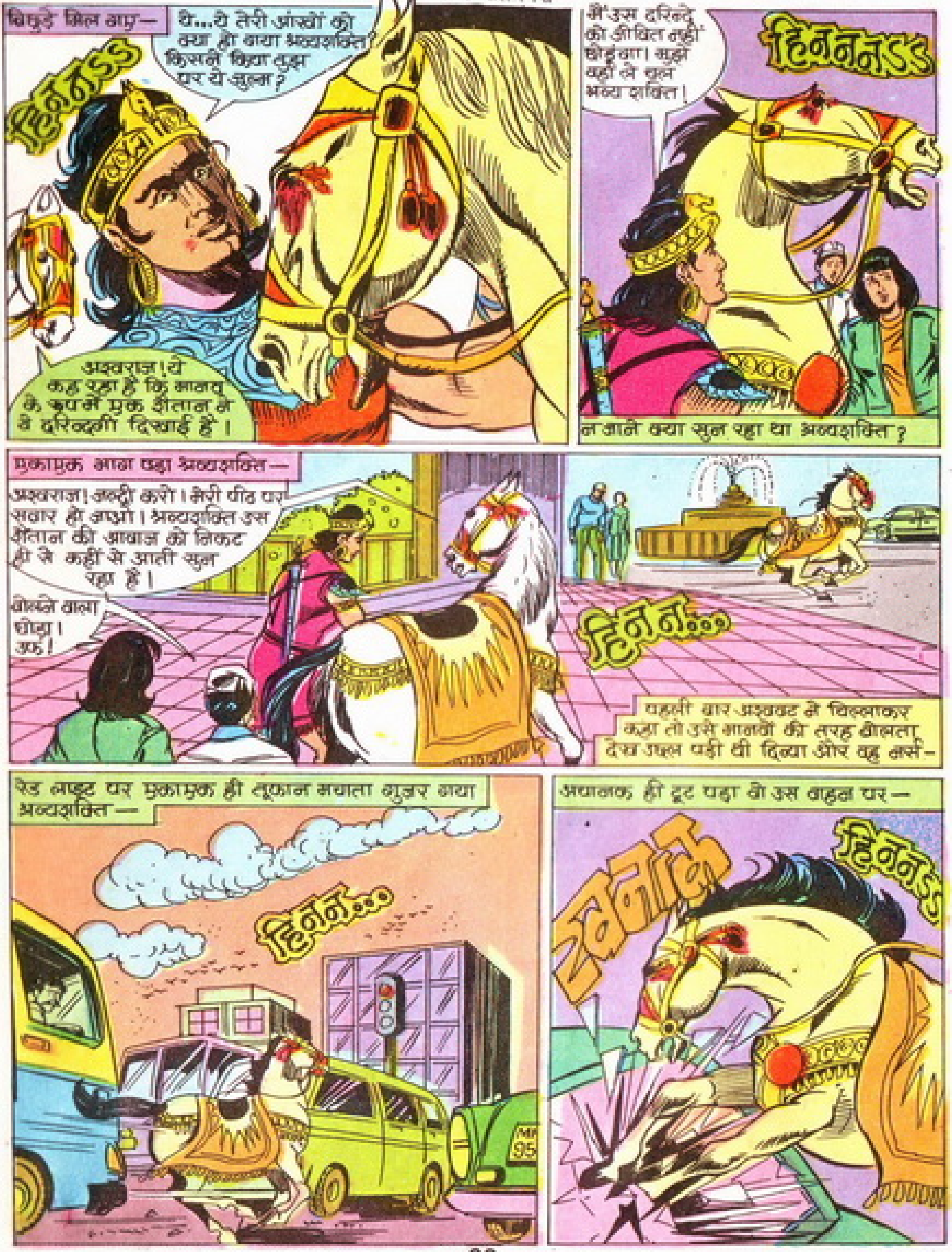
बिछुड़े मिल गए—
ये...ये तेरी आंखों को क्या हो गया अश्वशक्ति? किसने किया तुझ पर ये जुल्म?
हिनन्ऽऽ
अश्वराज! ये कह रहा है कि मानव के रूप में एक शैतान ने ये दरिंदगी दिखाई है।
मैं उस दरिंदे को जीवित नहीं छोड़ूंगा। मुझे वहां ले चल अश्वशक्ति।
हिननन्ऽऽ
न जाने क्या सुन रहा था अश्वशक्ति?
एकाएक भाग पड़ा अश्वशक्ति—
अश्वराज! जल्दी करो। मेरी पीठ पर सवार हो जाओ। अश्वशक्ति उस शैतान की आवाज को निकट ही से कहीं से आती सुन रहा है।
बोलने वाला घोड़ा! उफ!
हिनन...
पहली बार अश्वराज ने चिल्लाकर कहा तो उसे मानवों की तरह बोलता देख उछल पड़ी थी दिव्या और वह नर्स—
रेड लाइट पर एकाएक ही तूफान मचाता गुजर गया अश्वशक्ति—
हिनन...
अचानक ही टूट पड़ा वो उस वाहन पर—
खटाक
हिननऽऽ

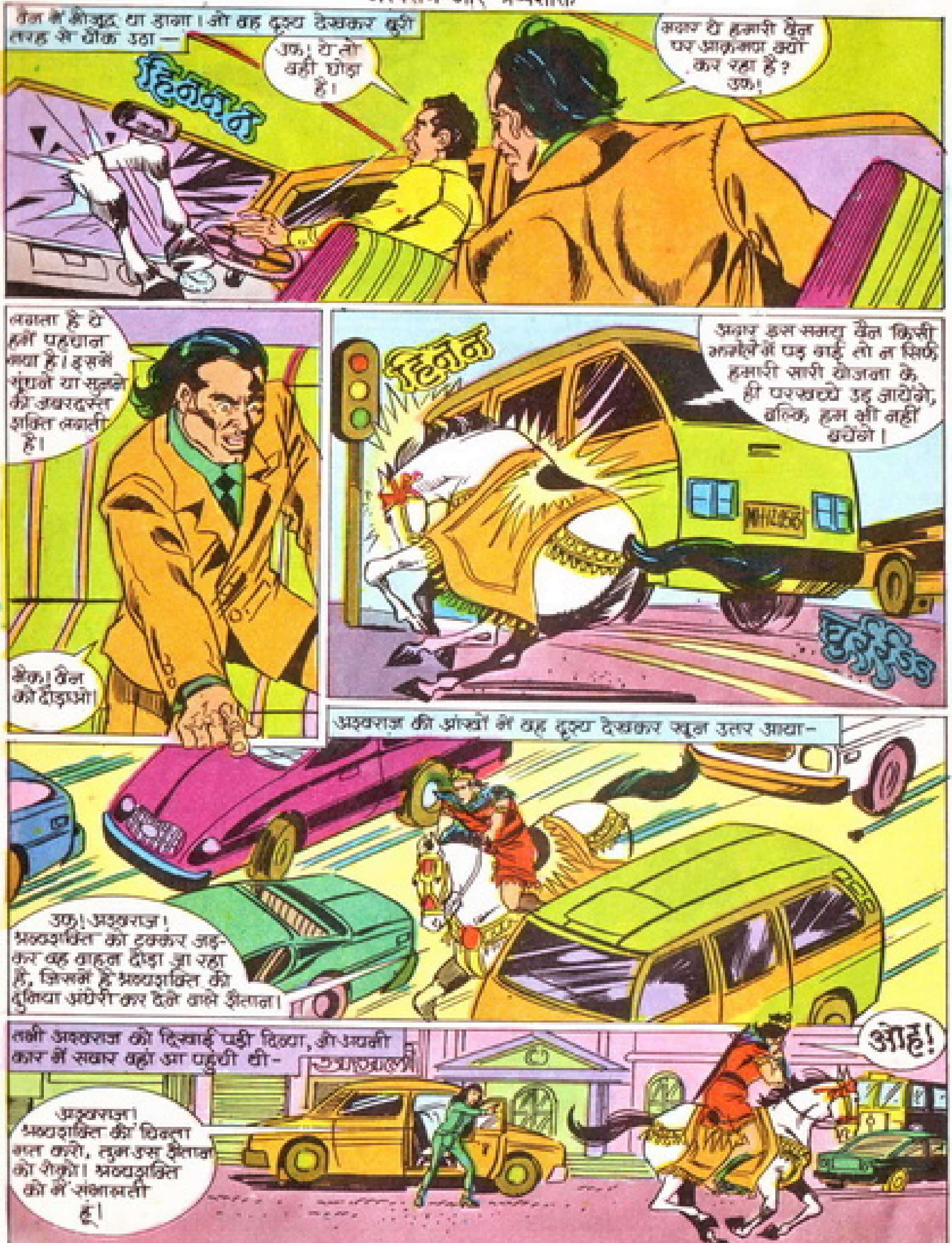
वैन में मौजूद था डागा। जो वह दृश्य देखकर बुरी तरह से चौंक उठा —
उफ़! ये तो वही घोड़ा है!
मगर ये हमारी वैन पर आक्रमण क्यों कर रहा है? उफ़!
लगता है ये हमें पहचान गया है। इसके सूंघने या समझने की ज़बरदस्त शक्ति लगती है।
जैक! वैन को दौड़ाओ!
अगर इस समय वैन किसी झमेले में पड़ गई तो न सिर्फ़ हमारी सारी योजना के ही परखच्चे उड़ जायेंगे, बल्कि हम भी नहीं बचेंगे।
अश्वराज की आंखों में वह दृश्य देखकर खून उतर आया—
उफ़! अश्वराज! श्रव्यशक्ति को टक्कर अड़कर वह वाहन दौड़ा जा रहा है, जिसमें हैं श्रव्यशक्ति की दुनिया अंधेरी कर देने वाले शैतान।
तभी अश्वराज को दिखाई पड़ी दिव्या, जो अपनी कार में सवार वहां आ पहुंची थी—
ओह!
अश्वराज! श्रव्यशक्ति की चिंता मत करो, तुम उस शैतान को रोको! श्रव्यशक्ति को मैं संभालती हूं!

तब ! रफ्तार पकड़ता चला गया अश्ववट—
तेज़ दौड़ अश्ववट! और तेज़।
कोई अजीबो-गरीब घुड़सवार हमारा पीछा कर रहा है, डागा साहब!
शीघ्र ही—
अश्वराज! वो दरिन्दे उस इमारत में प्रवेश कर रहे हैं।
वो हमारा पीछा करते हुए यहां तक आ पहुंचा है।
आने दो उसे।
इधर उस "हट" में प्रवेश के साथ ही—
स्SSप्रेSS
ओह!
उफ!
बेहोश होकर लुढ़कते चले गए दोनों—
और तब जबकि उन्हें होश आया—
तुम? तुम यहां?
हां। उस वक्त तो तुम मेरे हाथों से बच निकले थे, मगर अब नहीं बचोगे।
ओह! तो तुम इसे जानते हो!
ये ही है वो डागा साहब, जिसके कारण मुझे राणा नाम की उस मुसीबत को खत्म करने का अपना उद्देश्य बीच में ही छोड़कर भागना पड़ा था।
ओह!

अच्छा, अलविदा अश्वराज! हम चलते हैं क्योंकि अब से ठीक एक घण्टे बाद लेक-व्हाइट से एप्पल नामक जो अंतरिक्ष यान उड़ान भरने वाला है, हमें उसे कम्पान गन द्वारा धराशायी करना है।...
...क्योंकि हमारे देश की सरकार नहीं चाहती कि यह देश तरक्की का प्रयास करे। हा हा हा।
??
किसी को पता नहीं चलेगा और कम्पानगन की तरंगें "एप्पल" की सफलता को असफलता में बदल देंगी। हा हा हा।
और हम बेलून यान में बैठकर यहां से आराम से अपने देश को रवाना हो सकेंगे।
मैक, डागा व पिंगपांग उस चैम्बर से बाहर निकल गए, और तब-
अच्छा अलविदा अश्वराज। दो ही मिनट बाद लोहे की दीवारों के बने इस चैम्बर में पानी भरना शुरू हो जायेगा और तुम्हारी जल-समाधि यहीं बन जायेगी। हा-हा-हा। क्योंकि बाहर से मैंने इस दरवाजे पर जड़ दिया है अलीगढ़ी ताला।
खट-खट की ध्वनि के साथ दीवारों में से बाहर को उभरकर आए कई पाइपों में से छूटने लगीं पानी की बौछारें-
अश्वराज! कक्ष में पानी भरना शुरू हो गया है।
??
अश्वराज! कुछ करो, वरना सचमुच हमारी जल-समाधियां यहीं बन जायेंगी।
बंधन मुक्त होने के लिए मुझे अपनी इच्छाधारी शक्ति का इस्तेमाल करना होगा।

और वह विलक्षण अश्वमानव परिवर्तित हो गया अपने इच्छाधारी रूप में —
खनाक
अश्वकट के बंधनों को भी तोड़ डाला अश्वराज ने —
मैं इस कैद से निकलने की कोशिश नहीं छोड़ूंगा अश्वकट!
अश्वराज! लगता है हमारी जल-समाधियां यहीं बनकर रहेंगी।
लेकिन —
उफ! इस्पात की इन दीवारों को भेद पाना मुश्किल लग रहा है।
और तभी —
यह क्या? जलस्तर एकाएक ही घटने लगा है?
??
सामान्य रूप में लौट आया अश्वराज।
हैरान हो उठा अश्वराज —
तुम?
हाँ, मैं! मुझे यहाँ भव्यशक्ति लेकर आया है! वह बाहर खड़ा है।

ओह! अगर तुम समय पर यहां न पहुंच पातीं तो न जाने क्या हो जाता।
समय पर अश्वशक्ति के इशारे को समझ सकी मैं। वरना कभी न पहुंच पाती।
अश्वशक्ति! तुम पर हुए जुल्म का बदला मैं उन शैतानों से जरूर लूंगा।
और मेरे लिए इतना ही काफी है अश्वराज कि तुम मुझे मिल गए।
और तब–
मुझे लेक-प्वाइंट पहुंचना है दिव्या, क्योंकि वे लोग अपने खतरनाक इरादों के साथ उसी ओर गए हैं।
अश्वराज दिव्या को वह सब बताता चला गया–
...जिसे सुनने के बाद दिव्या की नसों में भी अजीब-सा तनाव उत्पन्न हो गया–
ओह! दुश्मनों की इस साजिश को हमें कामयाब नहीं होने देना है, अश्वराज!
लेकिन समय कम है और यहां आस-पास कोई फोन भी नहीं है और हमें वहां पहुंचने में काफी समय लग सकता है।
हमें अतिशीघ्र यहां से निकलना चाहिए।

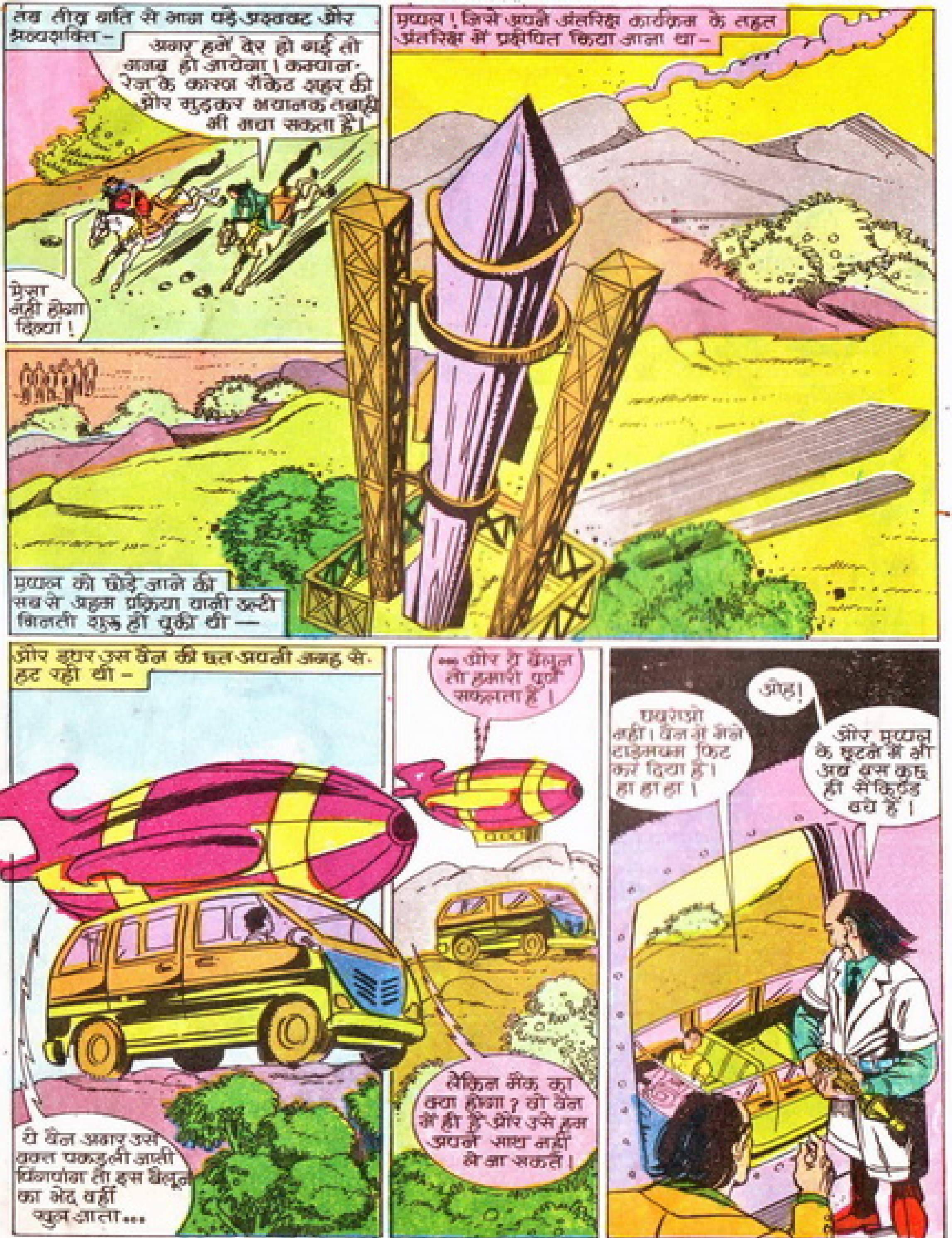
तब तीव्र गति से भाग पड़े अश्वकट और अश्वशक्ति –
अगर हमें देर हो गई तो गज़ब हो जायेगा। कम्पास-रेंज के कारण रॉकेट शहर की ओर मुड़कर अचानक तबाही भी मचा सकता है।
ऐसा नहीं होगा
मुग्धल! जिसे अपने अंतरिक्ष कार्यक्रम के तहत अंतरिक्ष में प्रक्षेपित किया जाना था –
मुग्धल को छोड़े जाने की सबसे अहम प्रक्रिया यानी उल्टी गिनती शुरू हो चुकी थी —
और इधर उस वैन की छत अपनी जगह से हट रही थी –
ये वैन अगर उस वक्त पकड़ली जाती पिंगपांग तो इस बैलून का भेद वहीं खुल जाता...
...और ये बैलून तो हमारी पूर्व सफलता है।
लेकिन मैक का क्या होगा? वो वैन में ही है और उसे हम अपने साथ नहीं ले जा सकते।
घबराओ नहीं। वैन में मैंने टाइमबम फिट कर दिया है। हा हा हा।
ओह!
और मुग्धल के छूटने में भी अब कुछ ही सेकिंड्स बचे हैं।

"ज़ीरो" की गिनती के साथ ही आग व धुएं का बवंडर छोड़ता हुआ ऊपर उठा प्रप्यल –
इधर प्रेम उसी वक्त उछल पड़ा डाक्टर —
उफ़! ये तो अश्वराज है!
ये कैद से कैसे बच निकला?
विक्रान्त! जल्दी करो! प्रप्यल को प्रक्षेपित कर दिया गया है। उसे कम्प्यूटर से नष्ट कर दो!
प्रप्यल के बाद मैं अश्वराज को भी धराशायी कर दूंगा डाक्टर साहब!
इधर ऊंचे उड़ते बैलून की ओर...
...उछला अश्वराज, और –
अश्वराज! संभलकर!

ठीक उसी समय कम्पानवान से पुष्पक की ओर छूटी वे प्रलयंकारी किरणें। बैलून को लगे झटके से निशाना चूका-
सं ऽऽऽऽ
इधर झटके से डागा और पिंगपांग बैलून के फर्श पर आ गिरे —
उफ!
निशाना चूक गया सब गड़बड़ हो गयी।
इसी पल नीचे टैंक उस प्रचण्ड धमाके के साथ मैक के भी जिस्म के चिथड़े उड़ाती चली गई-
और इधर शैतान उठकर खड़े हुए तो...
तुमने क्या सोचा था शैतानों कि इतनी दरिन्दगी दिखाकर तुम बच निकल जाओगे।
पिंगपांग! फिर हिला
पिंगपांग ने अपनी गन सीधी ही की थी कि अश्वराज की ठोकर ने उसकी बत्तीसी हिला दी-
बस! अब तू इस शस्त्रास्त्र का प्रयोग और अधिक न कर पायेगा, पिंगपांग!
आह..
मिशन की असफलता के क्रोध से पागल हुआ डागा भूखे भेड़िये के समान अश्वराज पर टूट पड़ा-
यहाँ से जाने से पहले इस मनहूस शहर के साथ तेरा अंत जरूर करके जाऊंगा।

फुर्ती के साथ अश्वराज ने चिंगापांग को ढाका के चाकू के आगे कर दिया-
आऽऽऽ
अश्वराज ने उछलकर वार किया ढाका पर—
तेरे ही हाथ से तू ढाका, जिन्होंने मेरे अश्वशक्ति की जिन्दगी अंधेरी कर दी।
इसी पल अचानक अट्टहास कर उठा ढाका—
हा हा हा! अश्वराज! अपनी जान बचा! अब मैं तेरी सारी हड्डियों का चूरा बना दूंगा।
??
ढाका ने कम्पास गन का फायर किया। इसी पल उछलकर बैलून यान से नीचे कूद गया अश्वराज—
यह तो और भी अच्छा हुआ। शैतान की लंका खुद शैतान की अपनी ही शैतानी से ध्वस्त होगी।
और कम्पासगन के फायर ने बैलून यान की धज्जियां उड़ा दीं—
अचानक धमाके में खोकर रह गई ढाका की भी चीखें-

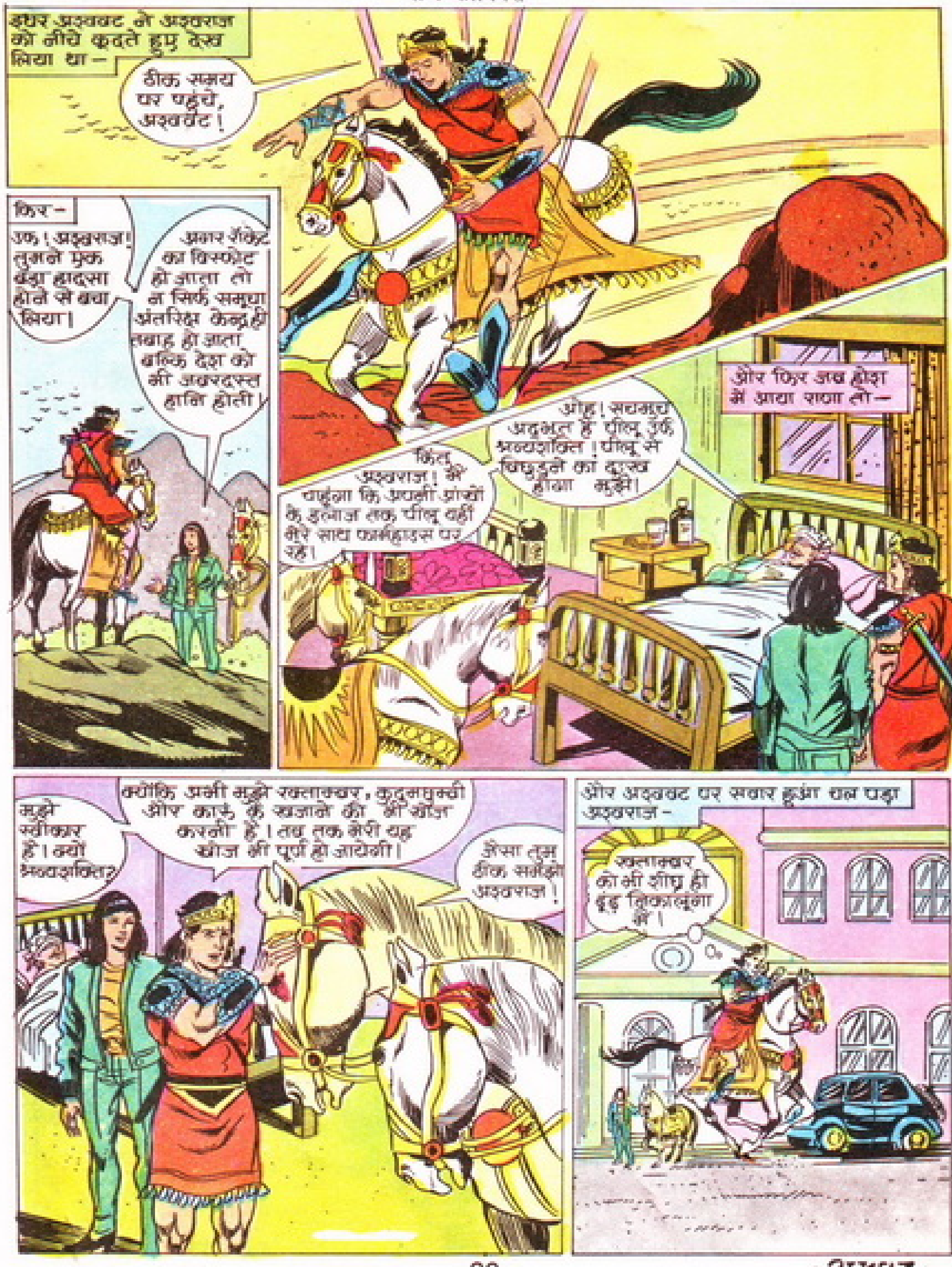
इधर अश्ववट ने अश्वराज को नीचे कूदते हुए देख लिया था –
ठीक समय पर पहुंचे, अश्ववट!
फिर –
उफ! अश्वराज! तुमने एक बड़ा हादसा होने से बचा लिया।
अगर रॉकेट का विस्फोट हो जाता तो न सिर्फ समूचा अंतरिक्ष केन्द्र ही तबाह हो जाता बल्कि देश को भी जबरदस्त हानि होती।
और फिर जब होश में आया राजा तो –
ओह! सचमुच अद्भुत है पीलू और अश्वशक्ति! पीलू से बिछुड़ने का दुख होगा मुझे।
किंतु अश्वराज! मैं चाहूंगा कि अपनी आंखों के इलाज तक पीलू यहीं मेरे साथ फार्महाउस पर रहे।
मुझे स्वीकार है। क्यों अश्वशक्ति?
क्योंकि अभी मुझे रक्ताक्षर, कुदमघुक्की और कारू के खजाने की भी खोज करनी है। तब तक मेरी यह खोज भी पूर्ण हो जायेगी।
जैसा तुम ठीक समझो अश्वराज!
और अश्ववट पर सवार हुआ चल पड़ा अश्वराज –
रक्ताक्षर को भी शीघ्र ही ढूंढ निकालूंगा मैं!

·समाप्त·